शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2012

शमशेर के काव्य में भाषा–शैलीगत तत्व

अरविन्द कुमार यादव
द्वारा,
रामशरण यादव, भारत कला भवन,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी–221005(उ.प्र.)

शोध संक्षेप

शमशेर बहादुर सिंह को रचनाकार के रूप में जितना यश प्राप्त हुआ है, उतनी ही उन्हें यातनाएं झेलना पड़ी हैं। उनकी उपलब्धियों को ध्यान में रखकर कुछ साहित्यकारों ने उनकी प्रशंसा की, और उन्हें अपनाया पर अधिकांश समीक्षकों के लिए वे अग्राह्य ही बने रहे। साहित्य में यही नियति निराला और मुक्तिबोध की रही है। शमशेर जी ने निराला के समान कभी अपनी प्रतिक्रिया नहीं दी। एक सचेतन रचनाकार की तरह आक्षेपों और प्रत्ययों से घिरे रहकर भी उन्होंने सदैव अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा। आज उनके साहित्य का अवगाहन करने के बाद दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके भाषिक रचाव पर विचार किया गया है।

शमशेर अधिक व्यवस्थित और शांत रचनाकार हैं। उन्होंने निराला की तरह स्पष्ट शब्दों में अपनी दो टूक प्रतिक्रिया तो नहीं दी, अपने शालीन स्वभाव से अपने विरुद्ध किये गये आक्षेपों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लिखा है ''वह कुछ क्या तादाद में काफी मेरी सीमायें भी तो हैं मसलन छायावादी युग के लिए, उसके सपनों के लिए छुपी हुई श्रद्धा–सी कहीं अब भी मेरे मन में है, वही धुंधला चित्र में भी खड़ा करता हूं। वही समस्याओं और घोर यथार्थताओं के कतराव बहरहाल फिर यह कि हिन्दी का संस्कार .....। उर्दू के लहजे मुहावरे और बनावटी तकल्लुफ पर खामख़्वाह रीझा हुआ हूं , यह नहीं जानता हिन्दी की एक अलग चीज है, जिसने अपने आप को अपनी अलग जमीन पर पक्का कर लिया है और करती जा रही है, संस्कृत उसकी जननी है।''[1] इन आक्षेपों पर उन्होंने ढंग से विचार किया है। उन्होंने व्यंग्यपूर्ण सुढंग में लिखा है। ''निवेदन इतना ही आज्ञा हो तो, कि जिन बहुत कलाकारों को मैं संस्कृत की गोद में पलकर हिन्दी में उतरता देखता हूँ। उनमें रम कर यह मेरी अक्षमता हो सकती है, उस दिव्य साहित्य का कहीं आभाई उसके साहित्य की सूक्ष्म मार्मिकता शब्दों में गहरा रचाव मोह लेने वाली सुरुचि और आँखे खोलने वाली दृष्टि ....नहीं मिलती। और उल्टे बल्कि.....मगर क्या कहा जाय, अवश्य में गलती पर हूँगा..... ।''[2] एक सचेतन रचनाकार की तरह आक्षेपों और प्रत्ययों से घिरा रहकर भी, अपने लक्ष्य को सदैव ध्यान में रखना और उस पर निर्द्वंद्व भाव से अग्रसर होते रहना शमशेर की विशेषता है पर्याप्त साधना और प्रतीक्षा के पश्चात् आज उनका मूल्यांकन के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है। वह शनैः शनैः मंथर गति से उसका कारण यह है कि उन्हें अब भी उनके लोग न समझ में आने वाला कवि मानते हैं, इसका उत्तर उनके प्रिय कवि मुक्तिबोध ने दिया है, ''शमशेर पर लगाया गया यह दोषारोपण कि कवि उलझे हुए हैं और उनकी बात समझ में नहीं आती है, उस आदत को सूचित करता है जिसे हम

सामान्यीकरण की आदत कह सकते हैं, चिन्तन के अनुसंधान के विहीन व्यक्ति भी बहुत आत्मविश्वास के साथ सामान्यीकरण करता है, सामान्यीकरण की इस आदत को ही हम यांत्रिक विचार शैली कहते हैं यांत्रिक विचारण से अनेक हानियां हुई हैं, साहित्य चिन्तन में यांत्रिक विचारणा कभी नहीं रही। विशिष्ट की मौलिकता की कीमत पर अर्थात् उसकी मौलिक अपेक्षा करते हुए जो सामान्यीकरण होगा वह छिछला सतही यांत्रिक होगा।

महान कवि का मूल्यांकन उसके जीवन काल में कम हो पाता है, शैली, कीट्स और शेक्यपीयर को कड़ी भ्रामक आलोचना का सामना करना पड़ा था। निराला स्वयं उसके जाल में फंस गये थे, मुक्तिबोध की वही हालत थी, शमशेर भी इस बात से पूरी तरह अवगत हैं कि देश के लोगों को अभी अपने रचनाकारों को समझने और उसका मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि आज के समाज में रचनाकार अकेला क्यों पड़ा है। उसे तन्हाई की गुमनाम जिन्दगी बसर करने के लिए क्यों विवश होना पड़ता है ? इसका कारण उन्होंने क्या बताया है, ''दरअसल हम मौजूदा साहित्य का अध्ययन उतना गहराई से नहीं करते, जितना कि करना चाहिए। मौजूदा साहित्य की दिलचस्पी आलोचक के लिए साहित्यिक उतनी नहीं है जितनी कि समाजिक पालिटिक्स''[3] इसका तात्पर्य यह है कि ''हम अपने साहित्यकारों के प्रति प्यार करना नहीं जानते, उन्हें समझना नहीं जानते, या चाहते, इधर–उधर से जोड़–तोड़ लगाकर माल बाजार में ढ़ेर का ढ़ेर सस्ते दामों पर बेचते हैं।''[4] इससे समझकर लेखक दुःखी अवश्य होता है, पर वह घुटने नहीं टेकता। शमशेर ने लिखा है कि ''हर लेखक का व्यक्तित्व उसकी ताकत जो चीज़ बन गई है, वह आप देखिए तो वही उसका अकेला समरथ है, जीवन में है, जो चीज़ उसे हँसाती है जिसके बल पर खड़ा होकर ऊँचा–ऊँचा उठता हुआ अपने आप को महसूस करता है, वह उसकी यही अकेली अपने अन्दर में वह 'स्वाधीनता' उसका अपने मे पूर्ण होने का आग्रह है यह आग्रह उसकी सांस उसका जीवन है, मुक्तिबोध ने जिस सामान्यीकरण की बात की है, और शमशेर ने आलोचकों की जिस अन्य मनस्कता और संकीर्णता को उल्लेख माना है, वे दरअसल मान है, हर रचनाकार को उनका सामना करना पड़ता है, मुक्तिबोध ने उसे झेला है, शमशेर ने भी, पर इससे उनका सर्जन अवरुद्ध नहीं हुआ है, और धारदार बना है।

मुक्तिबोध ने लिखा है, कि ''शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन बनाने के लिए अपने हाथों से खुद तैयार किया है उस भवन में जाने से डर लगता है, उसकी गंभीर प्रयत्न साधन पवित्रता के कारण, यह भवन ईंट और गारे का नहीं बना हैं, सर्जनात्मक चेतना और विधायक कल्पना का भवन है, जिसकी नींव अनुभूति है, उसकी संरचना उसकी अभिव्यक्ति है, समूचा जीवन खपाकर तिल–तिल अपने को गलाकर सतत् अध्यवसायरत रहकर बनाया है, उन्होंने अपने भवन को यह शिल्पगत जागरूकता और संरचनावाद कौशल का परिणाम है, जिसमें निरन्तर ध्वनि गूंजती रहती है, शमशेर की तत्वभिनिवेशी दृष्टि भी प्रतिध्वनि यह एक कृति रचनाकार की कीर्ति स्तम्भ है, जो उनके बिम्बों ,रसों, द्वन्दों, समासों और भाषिक–संघटना संबंधी प्रयोगों और संवेदना की अतल–स्पर्शी गहराइयों से अलंकृति है, इसके दृश्य स्वरूप में उनके अदृश्य–भाव और अदृश्य–स्वरूप में उनके दृश्य–जगत का बोध है।''[5] इसमें एक

अभूतपूर्व छिपने और पाने का भाव निहित है जो विचित्र ढ़ंग से अब मिला, अब मिलाकर एहसास हो उत्पन्न करता है, पर सदैव हाथ से फिसल जाता है। यह फिसलन सुधी पाठक को बड़ा बेचैन कर देती है, वह फिर उसे पाने का प्रयास करता है, लेकिन खोजी अपने को जब तक प्रयत्न में पूरी तरह समो नहीं देता, तब तक वह हस्तगत नहीं होता, एक बार हस्तगत हो जाने पर तो कंसी हाथ आ जाती है। भवन का 'बंजर कपाट' खुल जाता है, उसके अन्दर प्रवेश संभव हो जाता है, प्रवेश करने पर उनके व्यक्तित्व की बहुरंगी छटा का साक्षात्कार होता है, स्वयं शमशेर की पंक्तियां चरितार्थ हो उठती हैं–

''एक स्वच्छ और निर्मल
कविता वहाँ बह रही है।
एक जवान कविता।''[6]

यह साक्षात्कार सबके बस का नहीं है, जिसको सर्जक–दृष्टि नहीं प्राप्त है, वह इसे नहीं देख पाता है। इसी कविता में उन्होंने अपने को समझने का सूत्र भी प्रदान कर लिया है– ''वास्तव में दो कैनवास है, एक तरल, एक स्थिर दोनों पारदर्शी। एक दूसरे में छिपे हुए।''[7]

शमशेर एक कवि ही नहीं बल्कि, प्रकृति प्रेम, मानवीय प्रेम, राष्ट्रीय प्रेम, आह्वान और उद्‌बोधन, मृत्युबोध–प्रखर और यथार्थ तथा चित्रकला के सिद्धहस्त चित्रकार भी हैं। शमशेर का चित्रकारी ह्रदय उनकी कविता को सुन्दर बनाने में काफी सहायता प्रदान करता है।

शमशेर की रचना–प्रक्रिया में एक और तत्व सुन्दरता प्रदान करता है बिम्बधर्मिता। चित्रकार स्वभाव होने के कारण शमशेर के काव्य में बिम्ब, विशेषकर छोटे–छोटे बिम्ब काफी मात्रा में मिलते हैं। अपने समकालीन कवियों में शमशेर अपनी विशिष्ट पहचान बिम्ब प्रयोग पर ही रखते हैं। बिम्ब शमशेर की कविता को रंग–बिरंगी छटा और सजीवता प्रदान करते हैं। बिम्ब क्या है ? उससे कहाँ कविता लाभान्वित होती है, कविता किस प्रकार साधक और बाधक बनती है इसको सुलझाने और बिम्बात्मक समस्याओं को मुक्त करने वाले कवि मुक्तिबोध और आलोचक डॉ. केदार नाथ सिंह और डॉ. उषा जैन की श्रेणी में शमशेर भी हैं। इस कवि के कविता में आये बिम्ब अभिव्यक्ति को अतिशय समृद्ध करते हैं। शमशेर की कविता में बिम्ब अर्थ विकास में योग देते है। ये ऐन्द्रिक और अतीन्द्रिय दोनों ही अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में बिम्बों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। शमशेर की रचनाधर्मिता में प्रकृति–बिम्ब के साथ नारी–सौन्दर्य के आकर्षक चित्र भी मिलते हैं। बिम्बों के कई प्रकारों को शमशेर ने अपने रचनाधर्मिता में पक्का करके बड़े अच्छे ढंग से उकेरा है। रचनाधर्मिता के पाग से बुने गये बिम्बात्मक रूपी चादर कबीर के बिम्बात्मक चादर की तरह साफ–सुथरी दृष्टव्य होती है। जिसमें बिम्ब–रूपी कई अनमोल तार लगे हैं– प्रकृति–बिम्ब, गंध–बिम्ब, आस्वाद–बिम्ब, गायात्मक बिम्ब हैं, इतना ही नहीं सामाजिक–संचेतना, संबधी बिम्ब अप्रस्तुत–बिम्ब भी हैं। इस प्रकार विषय की दृष्टि से अनके काव्य में प्रकृतिक बिम्बों का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। अनुभूति और रागात्मकता ने मिलकर इनकी बिम्बों को तीव्रतर बना दिया है। इन्होंने बिम्ब के क्षेत्र में सर्वथा नवीन प्रयोग कर हिन्दी प्रयोगवादी धारा में अपनी प्रयोगशीलता की धाक जमायी है ऐन्द्रिक संवेदना के आधार पर दृश्य बिम्बों का प्राचुर्य है। इनकी कतिवाओं में स्वादेंद्रिय से संबंधित बिम्ब भी मिलते हैं। विषय की

दृष्टि से इन्होंने प्रकृति बिम्बों के प्रयोग मे सर्वाधिक प्रसिद्धि पायी है। इनका काव्य सुन्दर, कलात्मक, जीवन्त और प्रभावपूर्ण प्रकृति बिम्बों से भरा पड़ा है।

''तैरती आती है बहार
पाल गिराए हुए
भीने गुलाब–पीले गुलाब के''[8]

शमशेर की रचनाधर्मिता से एक ख़ास स्वरूप उभरकर सामने आता है वह है भषिक–संघटना। शमशेर के भाषिक–संघटना के प्रयोग से कविताओं में नवीनता आ गयी है, जिसमें उर्दू–हिन्दी दोनों भाषाओं की विशिष्टताओं के मेल से उन्होंने भाषा की एक नयी विशेषता की रचना की है। शमशेर ने भाषिक–संघटना में सर्वप्रथम भाषा के तात्विक तत्व को प्रयुक्त करके भाषा में वैज्ञानिकता एवं व्याकरणीकता ला दी है, इनकी भाषा में हिन्दी–उर्दू के तत्व के साथ ही संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण, प्रत्यय, उपसर्ग और अव्यय प्रयोग हुआ है, जो इनकी भाषा को जीवन्त, मार्मिक और सशक्त बना देता है। इतना ही नहीं भाषा के साथ ही इनकी कविताओं में विभाषा भी दृष्टव्य होती है, हिन्दी–उर्दू मिश्रित खड़ी बोली की नज़्म इनकी विभाषा में कसाव और चुस्ती ला दी है। रूप तत्व तो शमशेर की कविता के स्वरूप को बदलने में काफी सहायता प्रदान की है। इनकी कविता में छोटे–बड़े वाक्य इन्हीं के कारण आ गये हैं जो शमशेर की रचनाशीलता में अन्य समकालीन कवियों से वैभिन्न पहचान रखती है, जैसे कि मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय की कविताओं के रूप–विधान में मिलता है। वैसा ही शमशेर में भी है, शब्द ही कवि की अभिव्यक्ति होती है, अज्ञेय शब्द को काफी तवज्ज़ो देते हैं, जो अपनी एक विशिष्ट पहचान करते हैं, और विकास के योग में अर्थ प्रदान करते हैं। 'शब्द' भाषा में अलग–अलग पहचान रखते हैं, एक ही, हिन्दी शब्द अलग–अलग अर्थ व्यक्त करता है अंग्रेजी में अलग, संस्कृत में अलग और अन्य में अलग।

शमशेर का व्यक्तित्व बहुआयामी होने के कारण इनकी कविता में बहुभाषा का प्रयोग हुआ है जिससे अन्य भाषा के शब्द–वर्ग का निर्माण होता है, इतना ही नहीं शमशेर एक प्रयोगधर्मी कवि है जिससे इनकी रचना–प्रक्रिया में परिवर्तन आ गया है। इनकी काव्य में व्याकरणिक घटक भी उद्दीप्त है– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण, प्रत्यय, उपसर्ग की भाँति समास। समास शमशेर की कविता की अर्थवत्ता को और बढ़ा देते हैं जिससे काव्य में प्रयुक्त व्याकरणिक घटक सशक्त और मजबूत अधिक हो जाते हैं। शमशेर के काव्य सामासिक–घटक है–अव्ययीभाव, तत्पुरूष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्वन्द्व और दिगु। जिससे इनकी भाषिक–संघटना से कलात्मक जीवन्त और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है।

शमशेर की रचना–प्रक्रिया के अन्तर्गत बिम्बधर्मिता ऐसी भाषिक–संघटना के साथ है जिससे शैलीगत–तत्व का भी उद्घाटन होता है। शमशेर की रचना–प्रक्रिया इतनी चुस्त और दुरुस्त है कि साहित्यिक पक्ष के साथ ही वैज्ञानिक पक्ष का भी समागम हुआ है, जो अपनी सार्थकता व्यक्त करती हैं। जिसमें शैलीगत तत्व हैं। शमशेर की कविताओं में शैलीगत तत्व में–ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ है। ध्वनि को आनन्दवर्धन ने काव्य का प्राण स्वीकार किया है। शमशेर ने भी काव्य का प्राण ध्वनि को स्वीकार किया है। इन्होंने ध्वनि का अपने अनुसार काव्य में प्रयोग करने की कोशिश की है, जो कि विचलन, चयन और समानान्तरता के शैलीवैज्ञानिक तत्त्व से सम्पृक्त हैं। एक ओर ध्वनि विचलन और

चयन तो भाषा में सौन्दर्य और कलात्मक ला दी है तो दूसरी ओर समानान्तरता ने मधुर संगीत ला दिया है। जिसकी प्रामणिकता 'बात बोलेगी' और 'जहाज़ियों की क्रांति में मिलती है। शमशेर अपनी लेखन–प्रक्रिया के दौरान शब्द–विधान का प्रयोग बड़ी शिद्दत से करते हैं, जो कि भाषा को सौन्दर्ययुक्त बनाने में सफल हुए हैं। इनके शब्द विधान में एक ओर संज्ञा सर्वनाम से युक्त व्याकरणिक आयाम है तो दूसरी और अलंकार और छन्द से युक्त पदावली है।

शमशेर ने शैलीगत–तत्व को प्रयुक्त करके अपने काव्य के रूप–पक्ष को निखार दिया है। जिसमें कारक, लिंग, विशेषण, तत्सम, तद्भव के साथ क्रिया के विदेशी रूप भी मिलते हैं। ये सभी तत्व भाषा को जीवन्त बनाने में कारगार सिद्ध होते हैं। शमशेर भाषा को शैलीगत तत्व के द्वारा और पुख्ता बनाने के लिए वाक्य–विधान का प्रयोग करते हैं। इनका वाक्य–विधान में अन्वय, क्रम, मुहावरे, और लोकोक्तियों के साथ ही वाक्य के लघु और दीर्घ वाक्य, पदबंधों और उपवाक्यों में समानान्तर के प्रमाण मिलते हैं। जिनकी पुष्टि 'सुन के ऐसी ही एक बात' और 'अम्न का राग' कविता में दृष्टव्य होता है, जो कि भाषा को गाम्भीर्य, अर्थवान और प्राणवान बनाता है। शमशेर के प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व ने भाषा के अर्थ को परिवर्तित कर दिया है। इनकी अर्थ–विधान में अलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, अभिधेयार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ के साथ ही श्लेषात्मक पदावली और प्रोक्तीय के जीवन्त प्राण तत्व मिलते हैं। इनकी प्रामाणिकता 'प्रेम' 'अकाल' 'य 'शाम है' कविताओं में देखने को मिलती है। अर्थ–प्रयुक्ति ने शमशेर के काव्य को प्रांजल, मधुर, सरस, कोमल, मार्मिक, मनोरंजक और प्रभावोत्पादक बना दिया है, जिससे भावाव्यक्ति में गम्भीरता आ गयी है। शैलीगत तत्व से इनकी कविताओं में जीवन्त, कलात्मक और प्रभावपूर्ण भाव की अभिव्यक्ति होती है।

शमशेर की रचना–प्रक्रिया प्रभाववादी रही है, जो कलाबद्ध होते हुए कालातीत है। ये स्वयं अपनी रचनाओं के जनक हैं। फिर भी कुछ सीमाएं हैं मलयज ने ठीक कहा है ''वे मूड्स के कवि हैं विजन के नहीं''[9]

निष्कर्ष : उनमें यथास्थान अन्तःविस्तार का दर्शन होता रहता है, पर रोचक बहिर्विस्तार हमें नहीं मिलता। प्रभाववादी कलाकार होने के कारण वे केन्द्रीय चेतना को ग्रहण करते हैं और उसे चित्रित करते हैं, पर उसके बाह्य स्वरूपों को परिवेश और वातावरण से जोड़ना भूल जाते हैं, इससे उनके चित्र कहीं पूरी तरह प्रभविष्णु नहीं बन पाये है। शमशेर संक्षिप्तता और प्रतीकात्मकता को महत्वपूर्ण मानते हैं। कुछ बातें कहकर कुछ पाठकों की संवेदना और कल्पना से संपादित होने को छोड़ देते है। हर पाठक इतना प्रतिभा सम्पन्न नहीं होता कि उन सूत्रों को खोजकर जोड़ सके एवं संरचना से आनन्द उठा सके। अपने इस प्रयत्न से वे विशिष्ट प्रतिभा रंग संकेतों का प्रचुर प्रयोग किया है, जो लोग उस अनुशासन से परिचित नहीं हैं, उन्हें उसको समझने में कठिनाई होती है।

सब कुछ के बावजूद शमशेर आज के साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं उनकी उपलब्धियां सर्जकों के लिए प्रेरणा का कार्य करेंगी।

संदर्भ

1. शमशेर बहादुर सिंह का गद्य साहित्य : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–311

2. वही, पृ.–312
3. समीक्षा की समस्याएं : शमशेर बहादुर सिंह, पृ. –123
4. शमशेर बहादुर सिंह का गद्य साहित्य : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–274
5. समीक्षा की समस्याएं : शमशेर बहादुर सिंह, पृ. –121
6. 'इतने पास अपने' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–55
7. वही, पृ.–55
8. 'कुछ कविताएँ' : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–58
9. शमशेर बहादुर सिंह का गद्य साहित्य : शमशेर बहादुर सिंह, पृ.–275